द्वितीयः पाठः

5J61BI

बाल-प्रतिज्ञा

(भविष्यत् काल/विधिलिङ्)

करिष्यामि नो सङ्गतिं दुर्जनानाम्

करिष्यामि सत्सङ्गतिं सज्जनानाम्।

धरिष्यामि पादौ सदा सत्यमार्गे

चलिष्यामि नाहं कदाचित् कुमार्गे।।

हरिष्यामि वित्तानि कस्यापि नाऽहम्

हरिष्यामि चित्तानि सर्वस्य चाऽहम्।

वदिष्यामि सत्यं न मिथ्या कदाचित्

वदिष्यामि मिष्टं न तिक्तं कदाचित्।।

भविष्यामि धीरो भविष्यामि वीरः

भविष्यामि दानी स्वदेशाभिमानी।

भविष्याम्यहं सर्वदोत्साहयुक्तः

भविष्यामि चालस्ययुक्तो न वाऽहम्।।

सदा ब्रह्मचर्य-व्रतं पालयिष्ये

सदा देशसेवा-व्रतं धारयिष्ये।

न सत्ये शिवे सुन्दरे जातु कार्ये

स्वकीये पदे पृष्ठतोऽहं करिष्ये।।

सदाऽहं स्वधर्मानुरागी भवेयम्

सदाऽहं स्वकर्मानुरागी भवेयम्।

सदाऽहं स्वदेशानुरागी भवेयम्

सदाऽहं स्ववेषानुरागी भवेयम्।।

-वासुदेव द्विवेदी 'शास्त्री'

शब्दार्थ

धरिष्यामि = रखूँगा। पादौ = दोनों पैरों को। हरिष्यामि = हरण करूँगा। वित्तानि = धनों को। तिक्त = कड़वा। धारयिष्ये = धारण करूँगा। जातु = कभी। पृष्ठतः = पीछे से। भवेयम् = होऊँ।

अभ्यास

1. उच्चारण करें-

सत्सङ्गतिम् धरिष्यामि सर्वदोत्साहयुक्तम्

पालयिष्ये स्ववेषानुरागी भवेयम्

2. एक पद में उत्तर दें-

(क) कस्य सङ्गतिं न करिष्यामि ?

(ख) अहं सदा कुत्र पादौ धरिष्यामि ?

(ग) अहं किं न वदिष्यामि ?

(घ) अहं कस्य चित्तानि हरिष्यामि ?

(ङ) अहं किं वदिष्यामि ?

3. कोष्ठक से उचित क्रिया-पदों को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति करें -

(क) अहं सज्जनानां सत्सङ्गतिं..... (करिष्यति, करिष्यसि, करिष्यामि)

(ख) अहं कस्यापि वित्तं न .....(हरिष्यामि, हरिष्यावः, हरिष्यामः)

(ग) अहं सदा उत्साहयुक्तः .....(भविष्यति, भविष्यामि, भविष्यसि)

(घ) अहं सदा स्वधर्मानुरागी .....(भवेव, भवेम, भवेयम्)

4. रेखांकित पदों के आधार पर प्रश्न-निर्माण करें-

(क) लता कदाचित् कुमार्गे न चलिष्यति।

(ख) अहं कस्यापि वित्तानि न हरिष्यामि।

(ग) वयं स्वदेशानुरागी भवेम।

5. वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करें -

(क) मंै सदा सत्य बोलूँगा।

(ख) हम सब कड़वी बात नहीं बोलेंगे।

(ग) मैं सदा देश-सेवा करूँगा।

(घ) मंै सदा स्वदेशानुरागी होऊँगा।

6. नीचे दिये गए चक्र को ध्यान से देखिए, बीच के गोले में कुछ क्रियापद दिए गए हंै। उचित क्रिया पदों को लेकर उसमें ऊपर दिए गए अधूरे वाक्यों को पूर्ण कीजिए-

(क) ..... (क) .....

(ख) ..... (ख) .....

(ग) ..... (ग) .....

(घ) ..... (घ) .....

(ड.) ..... (ड.) .....

(च) ..... (च) .....

7. 'कृ' धातु का अर्थ 'करना' है। इस धातु के रूप लृट् लकार में तीनों पुरुषों एवं तीनों

वचनों में इस प्रकार होते हैं -

एकवचन द्विवचन बहुवचन

प्रथम पुरुष करिष्यति करिष्यतः करिष्यन्ति

मध्यम पुरुष करिष्यसि करिष्यथः करिष्यथ

उत्तम पुरुष करिष्यामि करिष्यावः करिष्यामः

इसी प्रकार 'धृ' एवं 'हृ' धातु के रूप होते हैं। इसे अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखिए।

शिक्षण संकेत-

1. इन श्लोकों का सस्वर वाचन कराएँ।

2. बाल-प्रतिज्ञा में की गई प्रतिज्ञा से अपने-अपने व्यवहारों की समीक्षा करने के लिए अभिप्रेरित

करें।

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।